

भाषा जितनी सरल बनेगी, उतनी ही जनमानस तक पैलेगी : प्रो. मिश्र

मेवाड़ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी

गंगरार। यदि हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो घर में हिन्दी बोलने के लिए बच्चों का प्रेरित करना होगा। हिन्दी जब मन की भाषा बनेगी तभी जन की भाषा बनेगी। यह विचार साहित्यकार बसंती पंचार ने मेवाड़ विश्वविद्यालय में विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हिन्दी की विशेषता यही है कि हर भावना के लिए इसके पास शब्द हैं। यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है। मुख्य वक्ता डॉ. दीलतराम शर्मा



ने कहा कि हिन्दी एक सरलतम अभिव्यक्ति का ऐसा स्त्रोत है जो कभी सूख नहीं सकती। हिन्दी न कभी मरी है न कभी मरेगी। मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक मिश्र ने कहा कि जब तक किसी भी लिपि का प्रयोग होता रहेगा, तब तक वह जीवित रहेगी। उन्होंने विभिन्न नगरीय सम्प्रताओं के पतन के कारणों पर विर्माण रखते हुए कहा कि रुद्रिवादिता और भाषाओं के प्रति दृढ़ता के भाव ने कई भाषाओं को खत्म करदिया। इसलिए हमें भाषाओं को सरल बनाने पर जोर देना होगा। प्रति कुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल ने

कहा कि विश्व भर में हिन्दी को प्रचारित प्रसारित करने के लिए विश्व स्तर पर अथक प्रयास किए गए हैं और किये जा रहे हैं। हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर हिन्दी व डीएलएड के विद्यार्थियों ने छायावाद कविता पर नाट्य प्रदर्शन किया। डॉ. त्रिगुणातीत जैमिनी और हरिओम गन्धर्व ने भजन प्रस्तुत किया। बालकविजयवीर सिंह राठौड़ ने हिन्दी पर स्वलिखित कवितापाठ किया। अतिथियों का परिचय हिन्दी के छात्र सत्यनारायण रेगर ने दिया। संचालन अब्दुल सत्तार ने किया। Date: 11-01-2023

**विश्व हिन्दी दिवस पर मेवाड़ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित
भाषा जितनी सरल बनेगी, उतनी ही जनमानस तक फैलेगी : प्रो. आलोक मिश्रा**

हिन्दी जब होगी मन की भाषा, तभी बनेगी जन की भाषा : बसंती पंवार

हिन्दी सरलतम अभिव्यक्ति का स्तोत्र है, यह कभी सूख नहीं सकती: डॉ. दौलतराम शर्मा

दूड़िया न्यूज़

चिन्ताइगढ़। यदि हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो घर में हिन्दी बोलने के लिए बच्चों के प्रेरित करना होगा। हिन्दी जब मन की भाषा बनेगी तभी जन की भाषा बनेगी। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में चिंध हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में साहित्यकार बसंती पंवार ने बताए मुख्य अतिथि कही। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी की विशेषता यही है कि हर भावना के लिए इसके पास शब्द हैं। यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है। बताए मुख्य वक्ता डॉ. दौलतराम शर्मा ने कहा कि हमें इस बात के लिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है। हिन्दी एक सरलतम अभिव्यक्ति का ऐसा स्रोत है जो कभी सूख नहीं सकती। हिन्दी न कभी मरी है न कभी मरेरी। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाए जाने के लिए विभिन्न अवसरों का ज़िक्र करते हुए कहा कि अनुवाद,



हिन्दी पत्रकारिता, कापेरेट जगत में हिन्दी सामग्री तैयार करने हेतु जांब की अपार सम्भावनाएं हैं। मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक मिश्रा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जब तक किसी भी लिपि का प्रयोग होता रहेगा, तब तक वह जीवित रहेगी। उन्होंने विभिन्न नगरीय सभ्यताओं के पतन के कारणों पर विर्मश रखते हुए कहा कि रुद्धिवादिता और भाषाओं के प्रति दृढ़ता के भाव ने कई भाषाओं को खत्म कर दिया। इसलिए हमें भाषाओं

को सरल बनाने पर जोर देना होगा। भक्तिकाल का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भक्तिकाल के संतो ने हिन्दी को सरल बना कर इसे जन-जन तक पहुँचा दिया। प्रति कुलपति आनन्द वर्धन शुक्ल ने कहा कि विश्व भर में हिन्दी को प्रचारित प्रसारित करने के लिए विश्व स्तर पर अथक प्रयास किए गए हैं और किये जा रहे हैं। उन्होंने विभिन्न देशों के अपनी यात्राओं और अनुभवों को साझा करते हुए हिन्दी भाषा की महत्ता को कम किए बगैर।

उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाने के लिये विचार-विमर्श व कार्य करने की जरूरत बताई। कहा कि रोजगार की भाषा ही हिन्दी को अनिवार्य बना दी। इस अवसर पर हिन्दी व डॉलेट द्वारा किया गया विद्यार्थियों ने

छायाचाद कविता पर नाट्य प्रदर्शन किया।

डॉ. त्रिगुणातोत जैमिनी ने सितार पर संगत करते हुए और हरिओम गन्धर्व ने तबले पर संगत कर्वीर भजन प्रस्तुत किया। बालकवि जयवीर सिंह गर्टीड़ ने हिन्दी पर स्वलिखित कवितापाठ किया। कार्यक्रम का आरम्भ सरस्वती वंदना, कुलगीत, हिन्दी गीत से तथा समापन राष्ट्रगान से हुआ। अतिथियों का ग्रिच्य हिन्दी के छात्र सत्यनायण रेगर ने दिया। संचालन अब्दुल सत्तार ने तथा आभार संगोष्ठी की संगेजिका डॉ. शुभदा पाण्डे ने की। इस अवसर पर ललित कला संकाय की अध्यक्ष प्रो. चित्रलेखा सिंह, डॉ. हरि सिंह चौहान, डॉ. पूजा गुप्ता, डॉ. सोनिया सिंगला, डॉ. जितेन्द्र वासवानी, वंदना चुण्डावत, निरमा शर्मा, लविना चपलोत, राजेश्वरी भाटी, सचिता कणिक, मृदुला सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भाषा जितनी सरल बनेगी, उतनी ही जनमानस तक फैलेगी: प्रो. आलोक मिश्रा
हिन्दी जब होगी मन की भाषा, तभी बनेगी जन की भाषा: बसंती पंवार

हिन्दी सरलतम अभिव्यक्ति का स्तोत्र है, यह कभी सूख नहीं सकती: डॉ० दौलतराम शर्मा

सच मीडिया

चिन्ताईगढ़। यदि हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो घर में हिन्दी बोलने के लिए वच्चे का प्रेरणत करना होगा। हिन्दी जब मन की भाषा बनेगा तभी जन की भाषा बनेगी। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित गश्यत संग्रही में सहित्यकार बस्ती पंवार ने बताया मुख्य समीतिक कही। उसने आगे कहा कि हिन्दी को विशेषता यही है कि हर भावका के लिए इसके पास शब्द हैं। यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है।



बतौर मुख्य वक्ता डॉ. दोलताराम शर्मा ने कहा कि हमें इस बात के लिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है। हिन्दी एक सरलतम् अधिकारी नहीं है। उसी स्थिती जैसे जो कभी सूखा नहीं सकता। हिन्दी न कभी मरी है न कभी मरेगी। उन्होंने हिन्दी को रेजिगर की भाषा बनाएँ। जाने के लिए विभिन्न अवसरों का जिक्र करते हुए कहा कि अनुवाद, हिन्दी का प्रकारिता, कापूरिता, ताजगत में ही सापमीठी तैयार करने हेतु जॉब की ओर समर्पण किए हैं। मेवाड़ विश्वविद्यालय के कलापति प्रौ. श.

अलाके मिश्रा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जब तक चीमी भी लिंग का प्रयाग होता रहेगा, तब तक वह जीवित रहेगी। उन्होंने विभिन्न नारायण दूष्टाओं के नाम के कारणों पर विवरण खड़ते हुए कहा कि लक्ष्मीदाता और भाषा आंग के प्रति दृढ़ता के भाव ने कई भाषा आंगों को खूब कर दिया है। इसलिए हमें भाषा आंगों को सख्त बनाने पर जोर देना होगा। भक्तिकाल का जिझक भक्तिकाल के संताने हैं उन्हें कहा कि भक्तिकाल के संताने हैं जो इसे जन-जन तक

पहुँच दिया। प्रति कुलपति आनन्द वर्धन सुकूल ने कहा कि विश्व भर में हिन्दी को प्रचारित प्रसारित करने के लिए विश्व स्तर पर अथक प्रयास किए गए हैं और किये जा रहे हैं। उन्होंने विश्वामित्र देखा कि अपने यात्राओं और अनुभवों को बताकर रहे हुए भाषा की महत्वा को रेखांकित किया। व्यापार औधन देते हुए हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ० सुधा पाण्डेय ने हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार रखते हुए कहा कि आज पढ़ने को प्रवृत्ति कम होती जा रही है। आज इंस्टरेट ने युवाओं में पढ़ने के लिए अवधारणा का स्थिति को कम कर दिया है। हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है। विषय प्रतिष्ठापना करने पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ० सुमित्र कुमार पाण्डेय ने इस वर्ष की योग्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए कहा कि हमें हिन्दी की जगत की भाषा बनाने के लिए प्रयास करने होंगे वो किसी राज्य की मातृभाषा को महत्वा को कम किए बरी। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाने के लिये विचार-विमर्श का कार्य करने की जरूरत बताई। कहा कि रोजगार की भाषा है हिन्दी को अनिवार्य बना देंगे। इस अवसर पर हिन्दी व डॉ०८८८८८८८ के विवार्यों ने व्यापार कविता पर नाट्य प्रदर्शन किया। डॉ०८८८८८८ ने सितारे पर संपाद करते हुए और हल्मोड़ गवर्नर ने तबले पर संगत कबीर भजन प्रस्तुत किया। तबले पर जयवीं सिंह गठी ने हिन्दी पर स्वाक्षित कवितापाठ किया। कार्यक्रम का आरम्भ सरवती वदना, कूलीना, हिन्दी गीत से तथा समाप्त राशगांव से हुआ। अतिथियों का प्रवर्चय हिन्दी के छत्र सत्यनारायण रोगेर ने दिया। उन्हाँन अब्दुल सामा ने तथा आमार समग्रीकी स्थायिका डॉ० सुधा पाण्डेय ने की। इस अवसर पर ललित कला संकाय की अध्यक्ष प्रौ. चित्रलेखा सिंह, प्रौ. हरि सिंह चौहान, डॉ० पूजा तुला, डॉ० सोनिया सिंहाना, डॉ० जितेन्द्र वासवानी, वर्दना चूड़ावाला, निमा शर्मा, लविन चप्लावत, राजेश्वरी भाटी, सौचिता कर्णिक, मुदुला सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

राजस्थान दर्शन

उदयपुर संभाग

भाषा जितनी सरल बनेगी, उतनी ही जनमानस तक फैलेगी- प्रो. आलोक मिश्रा

हिन्दी जब होगी मन की भाषा,
तभी बनेगी जन की भाषा:
बसंती पंवर

हिन्दी सरलतम अभिव्यक्ति का
स्तोत्र है, यह कभी सूख नहीं
सकतीः डॉ० दौलतराम शर्मा

विश्व हिन्दी दिवस पर मेवाड़
विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय
संगोष्ठी आयोजित

राजस्थान दर्शन

चिन्ताइडगढ़। यदि हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो धर में हिन्दी बोलने के लिए बच्चों का प्रेरित करना होगा। हिन्दी जब मन की भाषा बनेगी तभी जन की भाषा बनेगी। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सहित्यकार बसंती पंवर ने बताए मुख्य अतिथि कही। उन्होंने आगे



कहा कि हिन्दी की विशेषता यही है कि हर भावना के लिए इसके पास शब्द हैं। यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है। बताए मुख्य बता डॉ० दौलतराम शर्मा ने कहा कि हमें इन बात के लिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है। हिन्दी एक सरलतम अभिव्यक्ति का ऐसा स्वोत है जो कभी सूख नहीं सकती। हिन्दी न कभी मरी है न कभी मरेगी। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाए। जाने के लिए विभिन्न अवसरों का ज़िक्र करते हुए कहा कि अनुवाद, हिन्दी पत्रकारिता, कार्पोरेट जगत में हिन्दी सामग्री तैयार करने हेतु जांब की अपार सम्मानाएँ हैं। मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक मिश्रा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जब तक किसी भी लिपि का प्रयोग होता रहेगा, तब तक वह जीवित रहेगी। उन्होंने विभिन्न नगरीय सम्प्रताओं के पतन के कारणों पर विमर्श रखते हुए कहा कि सहितादिता और भाषाओं के प्रति दृढ़ता के भाव ने कई भाषाओं को ख़त्म कर दिया। इसलिए हमें भाषाओं को सरल बनाने पर जोर देना होगा। भक्तिकाल का जिक्र करते हुए

उन्होंने कहा कि भक्तिकाल के संतो ने हिन्दी को सरल बना कर इसे जन-जन तक पहुँचा दिया। प्रति कुलपति अनन्द वर्द्धन शुक्ल ने कहा कि विश्व भर में हिन्दी को प्रचारित प्रसारित करने के लिए विश्व स्तर पर अथवा प्रयास किए गए हैं और किये जा रहे हैं। उन्होंने विभिन्न देशों के अपनी भाषाओं और अनुभवों को साझा करते हुए हिन्दी भाषा की महता को रेखांकित किया। स्वागत ड्डोऽन देते हुए हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ० शुभदा पाण्डेय ने हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार रखते हुए कहा कि आज पढ़ने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। आज इंटरनेट ने युवाओं में पढ़ने के लिए आवश्यक स्थिति को कम कर दिया है। हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है। विषय प्रातिरक्षणी करते पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ० सुमित कुमार पाण्डेय ने इस वर्ष की थीम पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कहा कि हमें हिन्दी को जनमत की भाषा बनाने के लिए प्रयास करने होंगे और भी किसी राज्य की मातृभाषा की महता को कम किए बर्गे। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाने के लिये विचार-विमर्श व

कार्य करने की जरूरत बताई। कहा कि रोजगार की भाषा ही हिन्दी को अनिवार्य बना देती है। इस अवसर पर हिन्दी बोलाएँड के विद्यार्थियों ने छायाचाद कविता प्र नाट्य प्रदर्शन किया। डॉ० त्रिपुणालीत जैमिनी ने सितार पर संगत करते हुए और हरिओम गवर्धन ने तबले पर संगत कबीर भजन प्रस्तुत किया। बालकवि जबकीर सिंह गठौँड ने हिन्दी पर स्वलिखित कवितापाठ किया। कार्यक्रम का आरम्भ सरस्वती बंदा, कुलगीत, हिन्दी गीत से तथा समापन राष्ट्रगान से हुआ। अतिथियों का परिचय हिन्दी के छात्र सत्यनारायण रेगर ने दिया। संचालन अव्युल सत्तार ने तथा आपार संगोष्ठी की संयोजिका डॉ० शुभदा पाण्डेय ने की। इस अवसर पर ललित कला संकाय की अध्यक्ष प्रो. चित्रलेखा सिंह, प्रो. हरि सिंह चौहान, डॉ० पूजा गुरुता, डॉ० सोनिया सिंगला, डॉ० जितेन्द्र बासवानी, बंदा चूपांडवत, निरमा शर्मा, लविना चपलोते, गुरज्ञश्री भाटी, संचिता कर्णिक, मुदुला सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

भाषा जितनी सरल बनेगी, उतनी ही जनमानस तक पैलेगी: प्रो. आलोक मिश्रा

निवाल दैनिक समाचार
10 जनवरी 2023

लक्षण सिंह परालिया

चित्तौड़गढ़ 10 जनवरी। यदि हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो घर में हिन्दी बोलने के लिए बच्चों के प्रेरित करना होगा। हिन्दी जब मन की भाषा बनेगी तभी जन की भाषा बनेगी। उक्त बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में साहित्यकार बसंती पंवार ने बतौर मुख्य अतिथि कही। उन्होंने आगे कहा कि हिन्दी की विशेषता यही है कि हर भावना के लिए इसके पास शब्द हैं। यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है। बतौर मुख्य वक्ता डॉ० दौलतराम शर्मा ने कहा कि हमें इस बात के लिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है। हिन्दी एक सरलतम अभिव्यक्ति का ऐसा स्रोत है जो कभी सूख नहीं सकती। हिन्दी न कभी मरी हैं न कभी मरेगी। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाए जाने के लिए विभिन्न अवसरों का ज़िक्र करते हुए कहा कि अनुवाद, हिन्दी पत्रकारिता, कापोरेट जगत में हिन्दी सामग्री तैयार करने हेतु जॉब की अपार सम्भावनाएँ हैं। मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक मिश्रा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जब तक किसी भी लिपि का प्रयोग होता रहेगा, तब तक वह जीवित रहेगी। उन्होंने विभिन्न नगरीय सम्भिताओं के पतन के कारणों पर विमर्श रखते हुए कहा कि रुद्धिवादिता और भाषाओं के प्रति दृढ़ता के भाव ने कई भाषाओं को ख़त्म कर दिया। इसलिए हमें भाषाओं को सरल बनाने पर जोर देना होगा। भक्तिकाल का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भक्तिकाल के संतो ने हिन्दी को सरल बना कर इसे जन-जन तक पहुँचा दिया। प्रति कुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ल ने कहा कि विश्व भर में हिन्दी को प्रचारित प्रसारित करने के लिए विश्व स्तर पर अथक प्रयास किए गए हैं और किये जा रहे हैं। उन्होंने विभिन्न देशों के अपनी यात्राओं और अनुभवों को साझा करते हुए हिन्दी भाषा की महत्ता को रेखांकित किया। स्वागत उद्घोषण देते हुए हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ० शुभदा पाण्डेय ने हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार रखते हुए कहा कि आज पढ़ने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। आज इंटरनेट ने युवाओं में पढ़ने के लिए आवश्यक स्थिरता को कम कर दिया है। हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है। विषय प्रतिस्थापना करते पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ० सुमित कुमार पाण्डेय ने इस वर्ष की थीम पर ध्यान केन्द्रित करते हुए कहा कि हमें हिन्दी को जनमत की भाषा बनाने के लिए प्रयास करने होंगे जो भी किसी रज्य की मातृभाषा की महत्ता को कम किए बगैर। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाने के लिये विचार-विमर्श व कार्य करने की जरूरत बताई। कहा कि रोजगार की भाषा ही हिन्दी को अनिवार्य बना देगी। इस अवसर पर हिन्दी व डीएलएड के विद्यार्थियों ने छायावाद कविता पर नाट्य प्रदर्शन किया। डॉ० त्रिगुणातीत जैमिनी ने सितार पर संगत करते हुए और हरिओम गन्धर्व ने तबले पर संगत कबीर भजन प्रस्तुत किया। बालकवि जयवीर सिंह राठोड़ ने हिन्दी पर स्वलिखित कवितापाठ किया। कार्यक्रम का आरम्भ सरस्वती वंदना, कुलगीत, हिन्दी गीत से तथा समापन राष्ट्रगान से हुआ। अतिथियों का परिचय हिन्दी के छात्र सत्यनारायण रेगर ने दिया। संचालन अब्दुल सत्तार ने तथा आभार संगोष्ठी की संयोजिका डॉ० शुभदा पाण्डेय ने की। इस अवसर पर ललित कला संकाय की अध्यक्ष प्रो. चित्रलेखा सिंह, प्रो. हरि सिंह चौहान, डॉ० पूजा गुप्ता, डॉ० सोनिया सिंगला, डॉ० जितेन्द्र वासवानी, वंदना चुण्डावत, निरमा शर्मा, लविना चपलोत, राजेश्वरी भाटी, संचिता कर्णिक, मृदुला सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।



विश्व हिन्दी दिवस पर मेवाड़ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

हिन्दी जब होगी मन की भाषा, तभी बनेगी जन की भाषा : पंचार

गंगरार, 10 जनवरी (जसं.)। यदि हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो घर में हिन्दी बोलने के लिए बच्चों को प्रेरित करना होगा। हिन्दी जब मन की भाषा बनेगी तभी जन की भाषा बनेगी।

यह बातें मेवाड़ विश्वविद्यालय में विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में साहित्यकार बसंती पंचार ने बताए मुख्य अतिथि कही। उन्होंने कहा कि हिन्दी की विशेषता यही है कि हर भावना के लिए इसके पास शब्द हैं। यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है। बताए मुख्य वक्ता डॉ. दौलतराम शर्मा ने कहा कि हमें इस बात के लिए चिंतित होने की जरूरत नहीं है। हिन्दी एक सरलतम अभिव्यक्ति का ऐसा स्रोत है जो कभी सख्त नहीं सकती। हिन्दी न कभी मरी है न कभी मरेगी। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाए जाने के लिए विभिन्न अवसरों का जिक्र करते हुए कहा कि अनुवाद, हिन्दी पत्रकारिता, कार्पोरेट जगत में हिन्दौ सामग्री तैयार करने हेतु जाँब की अपार सम्भावनाएं हैं। मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक मिश्र ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि जब तक किसी भी लिपि का प्रयोग होता रहेगा, तब तक वह जीवित रहेगी। उन्होंने विभिन्न देशों के



कारणों पर विमर्श रखते हुए कहा कि रुद्धी वादिता और भाषाओं के प्रति दृढ़ता के भाव ने कई भाषाओं को खुत्म कर दिया। इसलिए हमें भाषाओं को सरल बनाने पर जोर देना होगा। भक्तिकाल का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भक्तिकाल के सतों ने हिन्दी को सरल बना कर इसे जन-जन तक पहुँचा दिया। कार्यक्रम में प्रति कुलपति आनन्द बर्द्धन शुक्ल ने कहा कि विश्व भर में हिन्दी को प्रचारित प्रसारित करने के लिए विश्व स्तर पर अथक प्रयास किए गए हैं और किये जा रहे हैं। उन्होंने विभिन्न देशों के

अपनी यात्राओं और अनुभवों को साझा करते हुए हिन्दी भाषा की महत्ता को रेखांकित किया। स्वागत उद्घोषण देते हुए हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. शुभदा पाण्डेय ने हिन्दी की वर्तमान स्थिति पर विचार रखते हुए कहा कि आज पढ़ने की प्रवृत्ति कम होती जा रही है। आज इंटरनेट ने युवाओं में पढ़ने के लिए आवश्यक स्थिरता को कम कर दिया है। हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है। विषय प्रतिस्थापना करते पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुमित कुमार पाण्डेय ने इस वर्ष की शीम पर ध्यान केन्द्रित

करते हुए कहा कि हमें हिन्दी को जनमत की भाषा बनाने के लिए प्रयास करने होंगे, वह भी किसी राज्य की मातृभाषा की महत्ता को कम किए बगैर। उन्होंने हिन्दी को रोजगार की भाषा बनाने के लिये विचार-विमर्श व कार्य करने की जरूरत बताई। इस अवसर पर हिन्दी व डीएलएड के विद्यार्थियों ने छायावाद कविता पर नाट्य प्रदर्शन किया। इस दौरान डॉ. त्रिगुणातीत जैमिनी ने सितार पर संगत करते हुए और हारिओम गन्धर्व ने तबले पर संगत कवीर भजन प्रस्तुत किया। बालकवि जयवीर रिंग राठोड़ ने हिन्दी पर स्वलिखित कवितापाठ किया। कार्यक्रम का आरम्भ सरस्वती वंदना, कुलगीत हिन्दी गीत से तथा समापन राष्ट्रगान से हुआ। अतिथियों का परिचय हिन्दी के छात्र सत्यनारायण रेगर ने दिया। संचालन अब्दुल सत्तान ने तथा आभार संगोष्ठी की संयोजिका डॉ. शुभदा पाण्डेय ने व्यक्त किया। इस अवसर पर ललित कला संकाय की अध्यक्ष प्रो. चित्रलेखा सिंह, प्रो. हरि सिंह चौहान, डॉ. पूजा गुप्ता, डॉ. सोनिया सिंगला, डॉ. जितेन्द्र वासवानी, वंदना चुण्डावत, निरमा शर्मा, लविना चपलोत, राजेश्वरी भाटी, संचिता कर्पिंक, मृदुला सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। Jannayak 11-01-2023